जलोढ़ प्रदेश :- नदियों द्वारा लाये गये द्वारा निर्मित मैदान

- **खादर प्रदेश**
  - नवीन जलोढ़ मृदा का मैदान
  - जहां प्रतिवर्ष बाढ़ आती है।
- **बांगर प्रदेश**
  - पुरानी जलोढ़ मृदा का मैदान
  - कृषि कार्य सिंचाई के माध्यम से किया जाता है तथा अधिक सिंचाई के कारण रेह/कल्लर की समस्या उत्पन्न हो जाती है। जिसका उपचार करने हेतु जिप्सम का प्रयोग किया जाता है।

उत्तरी मैदान का प्रादेशिक वर्गीकरण

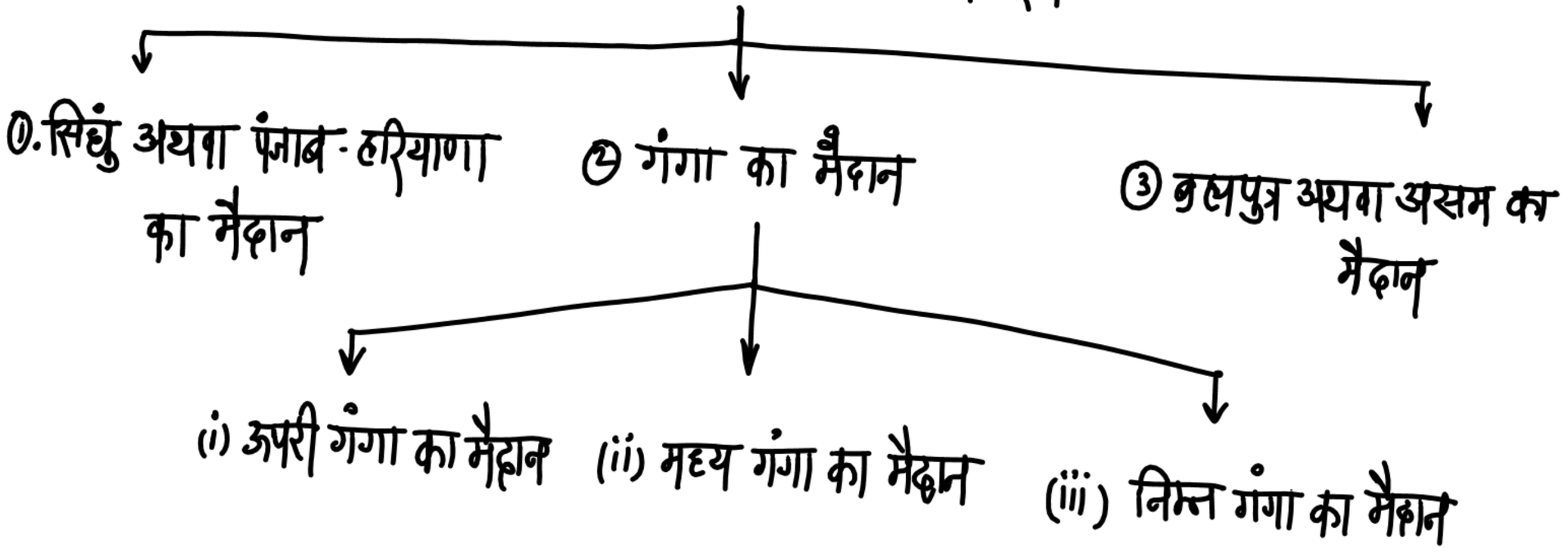

① पंजाब हरियाणा का मैदान – दोआब, चौ, धाणव बेट, मालवा मैदान, जिप्सी

दोआब → दो नदियों के मध्य उपजाऊ मैदान

चौ → सतलज नदी द्वारा अवनालिका अपरदन द्वारा निर्मित गढ्ढ़ेयुक्त भूमि को चौ (chos) कहा जाता है। सर्वाधिक होशियारपुर में मिलते हैं।

सिंधु

सिंधु सागर दोआब ①.

झेलम

चाज दोआब ②.

चिनाब

रचना दोआब ③.

रावी

बारी / ऊपरी दोआब ④.

ब्यास व्यास

बिस्त दोआब ⑤

सतलज

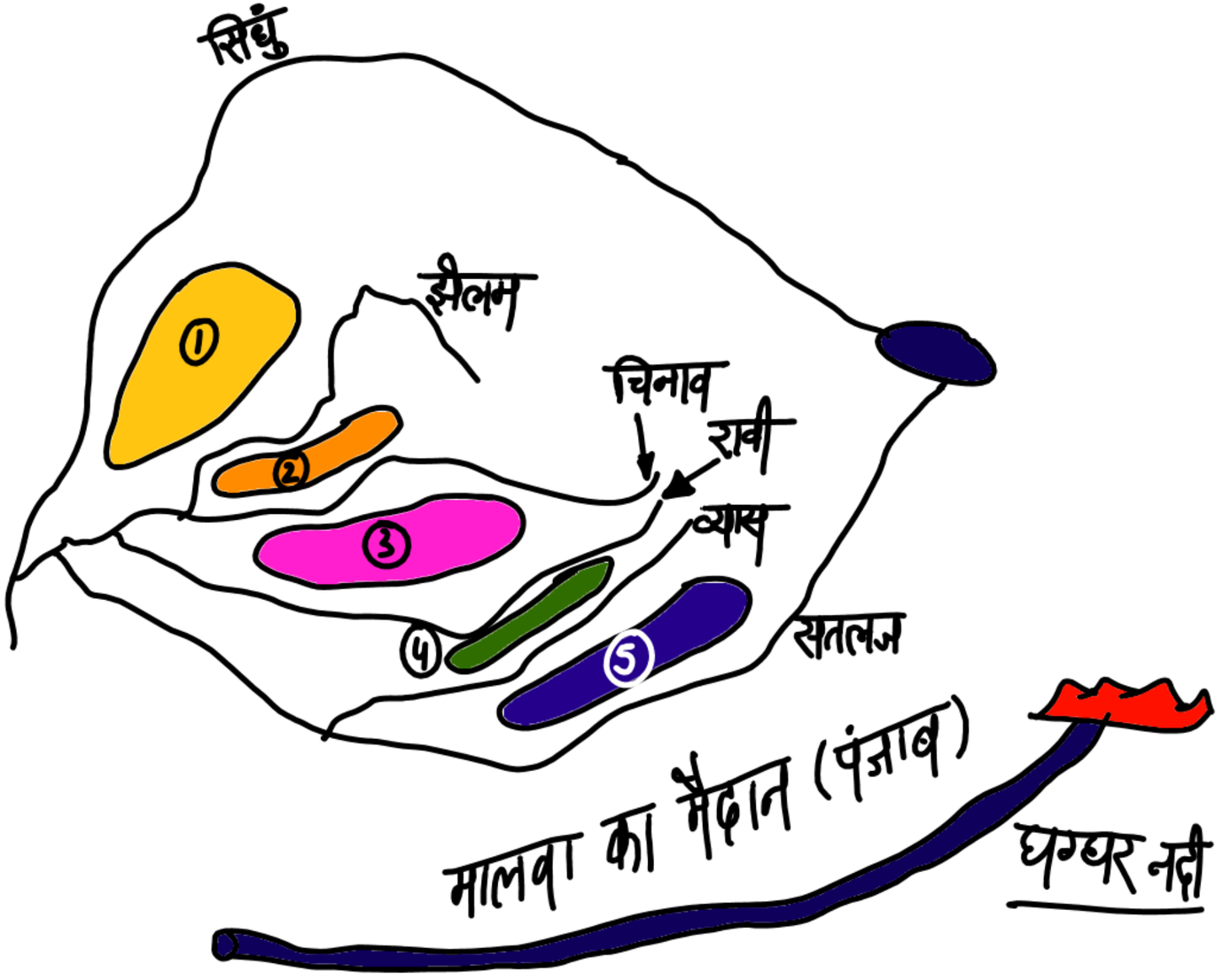

जिप्सी :- पंजाब के क्षेत्र में निवास करने वाली एक जनजाति थी, जो बाद में मध्य एशिया की ओर चले गये।

धाया व बेट :- पुरानी व नई गलोढ़ के मैदान को क्रमशः धाया व बेट कहा जाता है

② **गंगा का मैदान :-** उत्खात भूमि, भूड़ / भूर, कंकड़, विसर्पण, गोखुर झीलें, जल्ला व ताल, डेल्टा

✓ **उत्खात भूमि स्थलाकृति (Bad land Topography) :-** चंबल नदी द्वारा अवनालिका अपरदन के माध्यम से निर्मित गड्ढेयुक्त भूमि को ही उत्खात भूमि कहा जाता है तथा इस क्षेत्र में निर्मित जंगल बीहड़ कहलाते हैं। (Ravines)

भूर / भूड़ :- पवनों का निक्षेपित रेत को भूर कहा जाता है।

कंकर / कंकड़ :- अशुद्ध कैल्सियम की गांठें / ग्रंथिया होती है